

— समपि ganz zudecken: इमां लोकान्सर्वतः समपिधाप्य ङाट. Br. 8, 6, 23.

— अग्नि 1) dahingeben: मा कस्मै धातुमभ्यभिधायिणे नः RV. 4, 120, 8. — 2) richten auf: यो नो अग्निं ह्यो दधे RV. 2, 23, 6. नमो ज्योतिर्लोकाय — मरुपुरायाभिधीमहि Bṛāg. P. 5, 23, 8. 8, 3, 2. herrichten, anlegen: अग्निं वो देवो धियं दधिधं प्र वो देवत्रा वाचं कणुधम् 7, 34, 9. — 3) anlegen, umlegen mit Etwas; umwinden, binden; med., seltener act.: वाससा AV. 7, 37, 1. रश्नाभिर्दशभिर्भ्यधीताम् RV. 10, 4, 6. तेनाह्मिन्द्राजानामूतमसाभिर्दधामि सर्वान् AV. 8, 8, 8. 4, 16, 7. अग्निं वो ऋग्माहिं (wohl fehlerhaft für अग्निं) गामूतणामिव रज्ज्वा 3, 11, 8. अग्निं तं निर्हतिर्धितामश्चमिवाश्चभिधान्या 4, 36, 10. 8, 8, 5. 19, 50, 5. अग्निं हि रश्नयाधितं VS. 21, 46. ङाट. Br. 11, 3, 1. 14, 2, 1, 8. अभिहितं angebunden, angeschrirt, angespannt: यत्र वाङ्महिहिता दुर्ध्वत् RV. 5, 50, 4. 10, 83, 11. AV. 6, 63, 3. 9, 3, 8. ङाट. Br. 3, 2, 1, 18. 6, 3, 1, 26. — 4) belegen, mit Truppen überziehen: मागधानभ्यधाद्वली MBh. 2, 1090. — 5) umfassen so v. a. in Schutz nehmen: जीवात्रो अग्निं धेतुनादित्यासः पुरा ह्यवात् RV. 8, 56, 3. Nir. 6, 27. Naigh. 4, 3. — 6) an sich ziehen, zu sich zurückziehen: ददर्श गो (die Erde) तत्र सुपुप्सुरग्ने यो जीवधानो स्वयमभ्यधत् Bṛāg. P. 3, 13, 30. BURNOLF: la terre qu'il avait lui-même renfermée dans son sein. Vgl. प्रत्यभिः — 7) viell. sich verhalten zu (acc.): कथं वाह्यमभिधत्ते (प्राणाः) कथमध्यात्मम् PRAÇNOP. 3, 1. Nach Çāṅk. = धारयति. — 8) bezeichnen, benennen; pass. bezeichnet —, genannt werden, heissen: तन्नाम येनाभिधायति सत्त्वं तदाध्यातं येन भावम् RV. Prāt. 12, 5. ० धातुम् P. 4, 3, 91, Sch. कृशिव्दे। विलुमेवामिधत्ते Sāh. D. 17, 15. H. 17. स्त्रो गोत्रप्रत्ययेनाभिधीयते P. 4, 1, 94, Sch. ततस्त्वामभिधास्यति नाम्ना रुद्र इति प्रजाः Bṛāg. P. 3, 12, 10. श्रुतमित्यभिधीयते Çāṅk. Grh. 1, 2. M. 7, 82. MBh. 3, 12705. Bṛāg. 13, 1. 18, 11. R. 5, 37, 14. Bṛāshūp. 103. अभिहितं bezeichnet, genannt, heissend M. 3, 141. Çāṅk. 183. Çrut. 18. Sāh. D. 22, 7. — 9) angeben, auseinandersetzen, mittheilen, sprechen über, vortragen: द्वापाननभिधाय Kull. zu M. 9, 73. अभिधास्ये च ते राजन्नत्यं द्वयमुत्तमम् MBh. 14, 177. यस्ते अभ्यधापि समयः Bṛāg. P. 3, 23, 10. किं मया कर्तव्यं तदभिधीयताम् Hit. 58, 22. R. 1, 53, 14. सभसमभिधाय क्वापि संकेतमिमम् Vet. 24, 15. तत्तया वो अभिधास्यामि M. 1, 42. य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तैश्चभिधास्यति Bhāg. 18, 68. संदेशमभ्यधात्। कर्षादेव्यै Kathās. 9, 38. Bṛāg. P. 2, 1, 10. 4, 25. कबन्धवधमभ्यधुः Bṛāṭṭ. 7, 78. को अभिधास्यति — स्वयमात्मस्त्वे कयाम् R. 3, 35, 22. तद्वा अभिधास्ये Bṛāg. P. 2, 10, 51. Trik. 3, 3, 1. तस्यास्य कर्मकाण्डेन संबन्धा अभिधीयते Çāṅk. zu Brh. År. Up. p. 4. धातुवृत्तिः — अभिधीयते Verz. d. Oxf. H. No. 398. Etwas sagen, sprechen, aussprechen: श्रुत्वा श्रेयो अभिधास्यामि शापं वा ते MBh. 14, 1563. Hariv. 11164. मङ्गलान्यभिदध्युपी R. 2, 16, 20. अभिधत्से ह यदाक्यम् MBh. 1, 969. R. 2, 28, 5. Kathās. 14, 88. अह्मिदानीमनूतमभिधास्ये Mṛkēh. 53, 12. Pañkāt. 192, 24. Çiç. 9, 61. अभिधास्यामि वाक्यम् R. 1, 53, 8. Mṛkēh. 53, 14. अभ्यधादेवम् so sagte er Rāga-Tār. 1, 219. Çāṅk. zu Brh. År. Up. p. 128. तथेत्यभिदधे पुनः R. Gorra. 2, 123, 15. Ragh. 2, 43. Çāṅk. 12, 12. Daçak. in Benf. Chr. 188, 6. वाढमित्यभिधाय Pañkāt. 24, 11. 36, 14. 69, 14. Hit. 83, 14. Amar. 75. Vid. 187. Prab. 83, 17. इत्यभिधायि तु कैरपि Rāga-Tār. 2, 4. zu Jmd (acc.) sagen, — sprechen; act. R. 3, 40, 27. प्रभवत्तं पदस्थं च परमं को अभिधास्यति 6, 12, 7. Kathās. 1, 54.

7, 85. Vid. 136. Bṛāṭṭ. 13, 19. med.: स तम् — अभ्यधत्तेदम् Bṛāg. P. 3, 4, 24. अभिहितं angegeben, mitgetheilt, vorgebracht, vorgetragen, worüber oder über wen gesprochen worden ist, gesprochen M. 2, 7, 3, 286. 5, 100. 6, 83. 97. 8, 266. 9, 181. MBh. 4, 112. 13, 502. Bhāg. 2, 39. Vikr. 43, 17. सो ऽयं ते अभिहितस्तात भगवान्विश्वाभवः। समासेन Bṛāg. P. 2, 7, 50 तेषामुत्तमाभिहिताशिष्याम् R. 2, 63, 3. वाक्य 3, 31, 11. सार्धं कैरभिहितम् Pañkāt. 8, 20. 72, 11. zu dem gesprochen worden ist: सा तद्यमेवाभिहिता भवेन Kumāras. 3, 63. Mālav. 3, 9. — Vgl. अभिधा figg., ० धानो figg., ० धेय. — caus. nennen lassen: स्रगित्यभिधापयति Åçv. Grh. 3, 8. — प्रत्यभि 1) wieder an sich ziehen, — in sich zurückziehen: विश्वम् — प्रत्यभिधास्यति Bṛāg. P. 3, 7, 4. Vgl. u. अभि 6. — 2) erwiedern, antworten: प्रत्यभ्यधत् Bṛāg. P. 4, 3, 15. मया प्रत्यभिहिता Çāṅk. 84, 14. — 3) seine Zustimmung geben: मया च प्रत्यभिहितम् MBh. 5, 7459. — समभि zu Jmd. (acc.) sprechen: तम् — समभ्यधात् Kathās. 23, 93. इति समभिहितः Bṛāg. P. 5, 1, 20.

— अघ 1) einlegen, einstecken, einschieben; gewöhnlich und in den älteren Texten eintauchen, unter das Wasser (oder eine andere Flüssigkeit) bringen: न मा गर्त्र्य्यो मातृत्मा दासा यदो सुसंमुद्ध्यमवाधुः RV. 4, 138, 5. दर्विधतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मवावाधुस्तमो अष्टवर्षः 4, 13, 4. उत देवा अर्वाहितं देवा उन्नयन् पुनः den in's Wasser gefallen 10, 137, 1. आ सिञ्चोदकमव धेहेनम् (अगम्) AV. 9, 5, 5. 12, 5, 30. यो ते कृत्वा कूपे ऽवधुः 5, 31, 8. RV. 4, 103, 17. ङाट. Br. 2, 5, 2, 17. 3, 2, 1, 8. 8, 2, 26. लवणमेतदुदके ऽवधाय, अवधाः Khānd. Up. 6, 13, 1. — अघे मृत्पिण्डम् Kātj. Çr. 16, 2, 2. 6, 7, 13. किरणमद्योर्ह कुशोरत्तरवक्ति आस ङाट. Br. 3, 6, 2, 9. यथा नुरः नुरधाने ऽवक्तिः 14, 4, 2, 16. गर्ते Åçv. Grh. 4, 5. Çāṅk. Çr. 17, 10, 9. ततस्तांस्तेषु कुण्डेषु गर्भानवधत्ते तदा MBh. 1, 4503. यथा ह्यवक्तिो वक्रिर्दुरुधेकः स्वयानिषु। नानेव भाति विश्वात्मा भूतेषु च तथा पुमान् ॥ steckend in, eingeschlossen in Bṛāg. P. 1, 2, 32. हृदये ऽवधाय in's Herz schliessend 3, 3, 41. वासुदेवः स्वमाययात्मन्यवधीयमानः 5, 11, 13. — 2) wegdrängen, eindrücken: सो ऽवैवावर् समुद्रं दधावच पूर्वम् ङाट. Br. 1, 6, 3, 11. उत्संकध्या अवं गृधे धैहि VS. 23, 21. — 3) aufmerken, Acht geben: देव अवधीयताम् Hit. 83, 15. अवक्ति (oxyt. gaṇa प्रवृद्धादि zu P. 6, 2, 147) aufmerksam, Acht gebend, ganz bei einer Sache seiend: अणु मे ऽवाक्ता वचः R. 2, 63, 4. Çāṅk. 30, v. 1. 100. 64, 13. 93, 3. 111, 2. Megh. 98. Prab. 79, 7. कर्तव्येष्ववहितेन भवता भवितव्यम् 33, 2. — Vgl. अवधातव्य, ० धान, ० धि. — caus.: गर्तेष्ववकामवधापयेत् lässt einlegen Åçv. Grh. 2, 8. 4, 4.

— अभ्यव niederschlagen (den Staub): पौरजनाश्रुभिः। पतितैरभ्यवहितं प्रशशाम महीरजः ॥ R. 2, 40, 33.

— प्रत्यव wieder einlegen u. s. w. (s. u. अव): हृदये प्रवृह्योत्तमं प्रत्यवधाति ङाट. Br. 3, 8, 5, 8. 2, 4, 2, 24. 13, 5, 2, 10.

— व्यव 1) dazwischenstellen: व्यवधाय दक्षम् Ragh. 9, 57. — 2) hier und dort hinlegen: व्यवधाति दर्भपिञ्जलानि Çāṅk. Br. 18, 8. — 3) weglassen: व्यवध्याह्वतारम् Kātj. 12, 8. trennen, unterbrechen: एवं भार्याश्च पुत्राश्च सुहृदश्च वसूनि च। समेत्य व्यवधीयते R. Gorra. 2, 114, 13. नाहंममेति भावो ऽयं पुरुषे व्यवधीयते Bṛāg. P. 1, 29, 70. एतां स्मृतिं ते — न ह्येष व्यवधात्कालः 6, 4. व्यवहितं getrennt, geschieden VS. Prāt. 1, 38. 3, 64. 94. Schol. zu 4, 134. 167. Schol. zu P. 1, 1, 66. 67. 4, 82. 8, 1, 38. अ० nicht